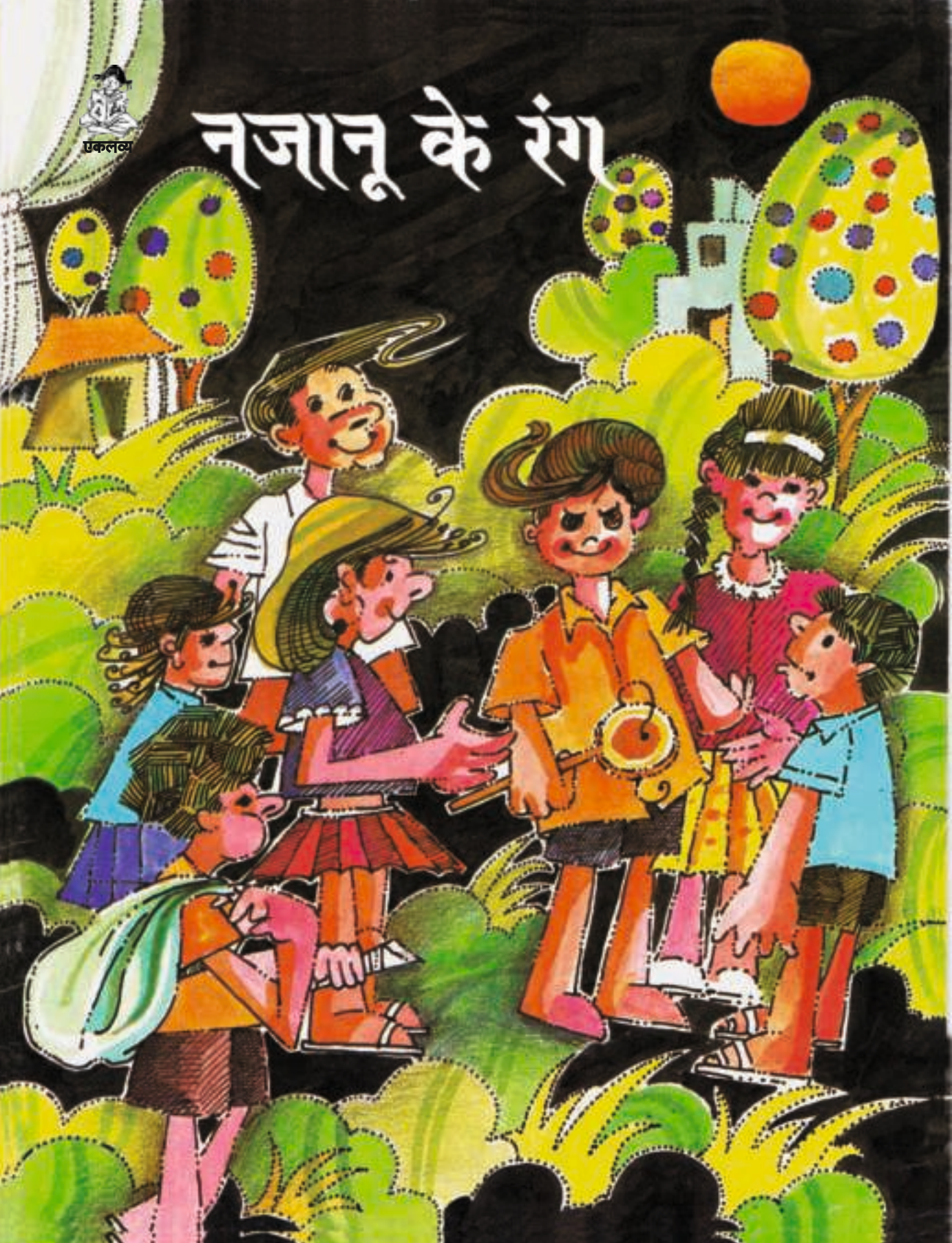

नजानू के रंग
एकलव्य

नजानू के रंग

नजानू की कहानियों के चकमक में प्रकाशित नाट्य रूपान्तरों का संकलन

मूल कहानियाँः निकोलाई नोसोव
नाट्य रूपान्तरः कविता सुरेश
चित्रः धनंजय

एकलव्य का प्रकाशन

नजानू के रंग

NAJANU KE RANG

नजानू की कहानियों के चकमक में प्रकाशित नाट्य रूपान्तरों का संकलन

आवरणः धनंजय

© एकलव्य

पहला संस्करणः मार्च, 1997/3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः मार्च, 1999/5000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रणः मई, 2004/3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रणः मई, 2006/3000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रणः जुलाई, 2008/3000 प्रतियाँ
पाँचवाँ पुनर्मुद्रणः अक्तूबर, 2010/3000 प्रतियाँ
छठवाँ पुनर्मुद्रणः अक्तूबर, 2015/2000 प्रतियाँ
कागज़ः 70 gsm मेपलिथो व 170 gsm आर्ट कार्ड कवर
यह किताब मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
एवं सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।
ISBN: 978-81-87171-13-3
मूल्यः ₹ 40.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल फोनः (0755) 2687 589

आपस की बात

चकमक एकलव्य द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

चकमक के लिए सामग्री खोजते समय यह हमेशा महसूस होता रहा है कि बच्चों के लिए अच्छे नाटकों की कमी है। ऐसे नाटक जिन्हें बच्चों को खेलने में न केवल मज़ा आता हो, बल्कि साथ ही साथ उनमें बच्चों के मन की बात भी कही गई हो, बहुत कम देखने को मिलते हैं।

प्रसिद्ध रूसी कथाकार निकोलाई नोसोव ने बच्चों के लिए तमाम कहानियाँ लिखी हैं। इनमें से उनकी कुछ कहानियाँ 'नजानू की कहानियों' के नाम से चर्चित हैं।

इनमें से तीन कहानियों के नाट्य रूपान्तर चकमक में वर्ष 1990-91 के विभिन्न अंकों में प्रकाशित हुए हैं।

ये नाट्य रूपान्तर चकमक की सम्पादकीय टीम की सदस्य कविता सुरेश के किए हैं, जो खुद एक रंगकर्मी हैं। चौथा नाटक 'नजानू ने रंग जमाया' कविता ने इन्हीं कहानियों से कुछ पात्र लेकर लिखा है।

इन नाट्य रूपान्तर का संकलन प्रकाशित करने के लिए पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली ने सहर्ष अनुमति दी है, इसके लिए एकलव्य उनका आभारी है।

उम्मीद है बच्चे इन नाटकों को पढ़ेंगे, खेलेंगे और आगे बढ़ाएँगे।

एकलव्य समूह

मार्च, 1997

नजानू कवि बना

(बच्चों के खेलने का मैदान। एक कोने में नजानू उदास बैठा है। उसके मित्र अपने खिलौने लेकर वहीं आते हैं। सब बच्चे मिलकर गीत गाते हैं।)

सारे बच्चे : देखो देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी चाल देखो
देखो देखो .....
मौज ऐसी बिना बात रहता मगन
कुछ नया कर दिखाने की मन में अगन
पर घड़ी दो घड़ी में ही टूटे लगन
बड़ा उलझा हुआ यह सवाल देखो
देखो देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी हर चाल देखो
देखो देखो .....

मोटू : अरे नजानू। वहाँ क्यों बैठे हो?

छोटू : आओ हम लोग नदी पहाड़ खेलेंगे।

नजानू : नहीं, तुम लोग खेलो।

जल्दबाज़ : अच्छा, राजा का मुर्गा खेलोगे?

नजानू : नहीं।

सुस्तराम : आँख-मिचौली?

नजानू : मुझे तुम्हारे गन्दे खेल नहीं खेलना।

मोटू : तो मरो! आओ, हम लोग नदी-पहाड़ खेलते हैं।

छोटू : मगर मैं बनूँगा।

सुस्तराम : ठीक है।

जल्दबाज़ : तैयार?

सब : तैयार

(सारे बच्चे खेलने लगते हैं। नजानू उन्हें मुँह चिढ़ाता है। उसी समय गुलदस्ता वहाँ आता है।)

गुलदस्ता : नजानू, ओ नजानू! वहाँ चुपचाप क्यों बैठे हो? खेलोगे नहीं।

नजानू : नहीं, मेरा मन खेल में नहीं लगता। मैं बड़ा कलाकार बनना चाहता हूँ।

गुलदस्ता : अरे हाँ। तुम तो चित्रकारी सीख रहे थे न?

नजानू : हाँ ऽ। लेकिन वो काम मुझे पसन्द नहीं आया।

गुलदस्ता : क्यों, क्यों?

नजानू : एक दिन मैंने डॉक्टर गोलीवाला की दीवार पर भैंस का चित्र बनाया था। उन्होंने मेरी माँ से शिकायत कर दी।

गुलदस्ता : अच्छा! तो यह बात है।

नजानू : गुलदस्ता जी! आप कविताएँ कैसे लिख लेते हैं?

गुलदस्ता : बहुत आसानी से। लेकिन उसके लिए मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी थी।

नजानू : आप मुझे कविता लिखना सिखा देंगे? मैं भी कवि बनना चाहता हूँ।

गुलदस्ता : हूँ ... सिखा तो सकता हूँ... अगर तुममें कविता रचने की प्रतिभा हो तो।

नजानू : हाँ-हाँ, क्यों नहीं? मैं तो बहुत प्रतिभाशाली हूँ।

गुलदस्ता : अपने मुँह मियाँ मिट्ठू!

नजानू : क्या?

गुलदस्ता : कुछ नहीं। मैं तो यह कह रहा था कि तुम्हारी प्रतिभा की परख करनी पड़ेगी । तुम जानते हो, तुक क्या होती है?

नजानू : तुक? नहीं, मैं तो नहीं जानता।

गुलदस्ता : तुक उसको कहते है जब दो शब्दों का अन्त एक ही तरह से होता है... जैसे चिड़िया-गुड़िया, घोड़ा-थोड़ा, समझे?

नजानू : हाँ, समझ गया।

गुलदस्ता : अच्छा, छड़ी की तुक बताओ।

नजानू : झाड़ी!

गुलदस्ता : यह कैसी तुक है - छड़ी-झाड़ी? इन शब्दों से तुक नहीं बनती।

नजानू : वाह क्यों नहीं बनती? इनका अन्त तो एक ही तरह से होता है।

गुलदस्ता : मगर कविता रचने के लिए इतना ही काफी नहीं है। यह ज़रूरी है कि शब्द एक ही तरह के हों और कविता का जोड़ बैठ सके। लो, सुनो, छड़ी-घड़ी, भट्टी-खट्टी, किताब-हिसाब।

नजानू : समझ गया, समझ गया! छड़ी-घड़ी, भट्टी-खट्टी, किताब-हिसाब,शाबास। हा-हा-हा।

(नजानू अपनी पीठ ठोककर खुश होता है।)

गुलदस्ता : अच्छा, अब सोंटा शब्द का तुक बताओ।

नजानू : ठोंटा!

गुलदस्ता : ठोंटा? ऐसा तो कोई शब्द नहीं है।

नजानू : है, है क्यों नहीं?

गुलदस्ता : बिलकुल नहीं है।

नजानू : अच्छा तो उलठोंटा।

गुलदस्ता : यह उलठोंटा क्या चीज़ है?

नजानू : जब उल्टे खड़े होकर गाना गाते हैं, तो उलठोंटा।

गुलदस्ता : तुम मुझे बुद्धू बना रहे हो! इस तरह का कोई शब्द नहीं होता। सुनो, अगर कविता करनी है तो ऐसा शब्द चुनना चाहिए जिसे सब समझते हों। ऐसा नहीं, जिसे खुद ही बना लिया हो।

नजानू : और अगर ऐसा शब्द न मिले जिसे सब समझते हों, तो?

गुलदस्ता : इसका मतलब यह है कि तुममे कविता रचने की प्रतिभा नहीं।

नजानू : तो तुम खुद ही बताओ, सोंटा की तुक क्या होगी?

गुलदस्ता : अभी लो।

(काफी देर तक सोचता है, सिर खुजाता है और परेशान होता है।)

गुलदस्ता : झोंटा.....कोंटा.....खोंटा.....रोंटा..... उफ। यह कैसा शब्द है। इस शब्द को क्या हो गया है। इसकी कोई तुक ही नहीं।

नजानू : देखा! खुद ने ही ऐसा शब्द लिया जिसकी कोई तुक ही नहीं है। उस पर कहते हो कि मुझ में कविता रचने की प्रतिभा नहीं है।

गुलदस्ता : अच्छा-अच्छा है प्रतिभा! बस? मेरा तो सिर दर्द करने लगा। इस तरह की कविताएँ लिखों, जिनका कोई अर्थ हो।

नजानू : इसका मतलब ..... यह तो बहुत आसान है।

गुलदस्ता : बिलकुल! बहुत आसान है।.. बुद्धू कहीं का। कविता करते-करते कहीं पिट न जाए।

(गुलदस्ता बड़बड़ाता हुआ चला जाता है। नजानू उछलता है। अपनी पुरानी जगह पर पहुँचकर सोचने लगता है। दूसरे बच्चे खेलते-खेलते थक जाते हैं।)

सुस्तराम : भई, अपन तो थक गए।

मोटू : हम भी।

जानू : हम भी।

जल्दबाज़ : अच्छा, अब राजा का मुर्गा खेलते हैं।

छोटू : हाँ, ठीक है।

जानू : मैं थानेदार।

जल्दबाज़ : मैं पहरेदार ।

छोटू : मैं मुर्गा।

मोटू : मैं और सुस्तराम, सिपाही।

जल्दबाज़ : हाँ चलो।

(मोटू और सुस्तराम दोनों हाथों से बाग का दरवाज़ा बनाकर खड़े हो जाते हैं। जल्दबाज़ पहरा देता है।)

जल्दबाज़ : जागते रहो ऽऽऽ ।

छोटू : कुकडूँ-कूँ ऽऽऽ ।

जानू : यह मुर्गा किसका?

छोटू : राजा का!

जल्दबाज़ : क्या लेने आया?

छोटू : खीरा ककड़ी, वन की डोर। राजा कहे, पपीता तोड़।

जानू : हूँ ऽऽ। राजा की निशानी है।

छोटू : हाँ! यह देखो राजा की कलगी।

(नजानू अचानक चिल्लाता हुआ उनके पास आता है।)

नजानू : अरे सुनो सुनो! मैंने बहुत अच्छी कविताएँ रची हैं।

सुस्तराम : अच्छा!

मोटू : किसके बारे में हैं तुम्हारी कविताएँ?

जानू : ज़रा सुनाओ तो।

नजानू : मेरी सारी कविताएँ तुम्हीं लोगों के बारे में हैं। सबसे पहली कविता तो जानू की ही है। लो,सुनो

जानू गया टहलने नदिया के तट पर
जाते-जाते कूदा मोटर की छत पर।

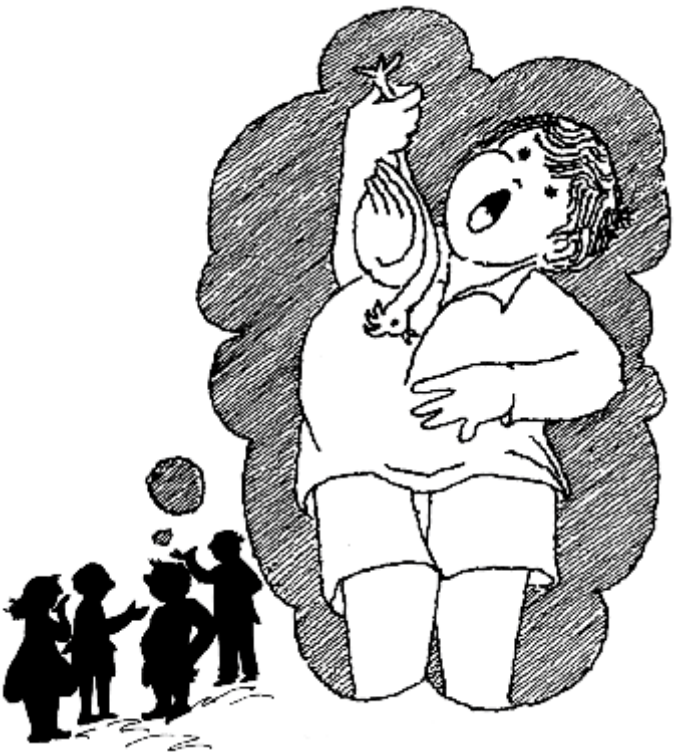

जानू : झूठ, मैं मोटर की छत पर कब कूदा?

नजानू : अरे, ऐसा तो सिर्फ कविता में हुआ, तुक मिलाने के लिए।

जानू : यानी तुक मिलाने के लिए तुम मेरे बारे में ऐसी झूठी बातें कहोगे।

नजानू : और क्या, मुझे सच्ची बात कहने की क्या पड़ी है? जो सच है वो तो है ही।

जानू : अच्छा! ज़रा फिर से ऐसा करके देखो तब पता चलेगा।

मोटू : ठीक है ठीक है! लड़ो मत। अच्छा, और दूसरों के बारे में तुमने क्या लिखा है?

नजानू : लो, जल्दबाज़ के बारे में सुनोः

जल्दबाज़ को भूख लगी
निगल गया जिन्दा मुर्गी

जल्दबाज़ : छी! यह मेरे बारे में इसने क्या लिखा है? मैंने तो कभी अण्डा भी नहीं निगला।

नजानू : हाँ-हाँ। मगर तुम चिल्लाते क्यों हो? यह तो मैंने तुक मिलाने के लिए कहा है।

जल्दबाज़ : मगर मैंने कोई मुर्गी नहीं निगली। न ज़िन्दा न पकी हुई।

नजानू : ओफ। तो मैं सच में थोड़े ही कह रहा हूँ। यह तो कविता है।

जल्दबाज़ : बड़ी अच्छी कविता, थू।

नजानू : अच्छा, लो! सुस्तराम की कविता सुनोः

सुस्तराम की जेब देखो
रखा है मीठा सेब देखो!

सब : दिखाओ-दिखाओ।

सुस्तराम : झूठ, सफेद झूठ! मेरी जेब में कोई सेब नहीं है। लो देख लो।

छोटू : हाँ-हाँ! इसकी जेब में तो कुछ भी नहीं है।

नजानू : तुम लोग कविता के बारे में तो कुछ भी नहीं समझते। ऐसा सिर्फ तुक मिलाने के लिए कहा गया है कि जेब में सेब रखा है। कोई असल में थोड़े ही रखा है। मैंने मोटू के बारे में भी कविता लिखी है।

मोटू : अपनी बकवास बन्द करो। यह हमारे बारे में साफ झूठ बघार रहा है और हम चुपचाप सुनते रहें।

छोटू : बहुत हो गया, हमें नहीं सुननी कविता-फविता। यह कोई कविता है? यह तो हमें चिढ़ाना है।

जल्दबाज़ : वाह! पहले कैसे चुपचाप सुनते रहे?

जानू : जैसे उसने हमारे बारे में कविताएँ पढ़ी, उसी तरह वह दूसरों के बारे में भी पढ़ेगा।

छोटू-मोटू : हमें नहीं चाहिए। हम नहीं सुनेंगे।

नजानू : अगर तुम लोग कविता सुनना नहीं चाहते तो मैं जाकर पड़ोसियों को सुनाऊँगा।

मोटू : अच्छा तुम्हारी इतनी हिम्मत! रुको बताता हूँ।

(मोटू और छोटू और बाकी सब मिलकर नजानू को मारने दौड़ते हैं।)

नजानू : रुको-रुको! तुम लोगों को अच्छा नहीं लगता तो मैं कविता नहीं पढ़ूँगा। ... तुम मुझे मारो मत।

छोटू : सच कह रहे हो?

नजानू : सच, बिलकुल सच।

मोटू : तो लगाओ उठक-बैठक

(नजानू उठक-बैठक लगाने लगता है।)

सुस्तराम : बोलो, मैं....!

नजानू : मैं...!

छोटू : अब कभी ....

नजानू : अब कभी ....

मोटू : कविता ....

नजानू : कविता....

सब : नहीं पढ़ूँगा।

नजानू : नहीं... पढ़ूँगा।

• • •

नजानू बना संगीतकार

दृश्य एक

(खेलने का मैदान। मैदान के आसपास, मंच के पिछले भाग में कुछ घर। वैसे घर न भी बने हों तो तुम मान तो सकते ही हो। मंच के बाएँ कोने पर कुछ लड़के खड़े हुए गीत गा रहे हैं।)

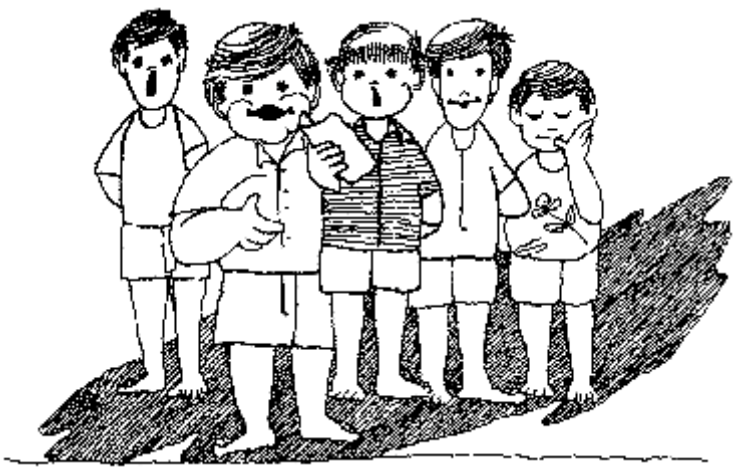

सारे लड़के : देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसी पड़ती है उल्टी हर चाल देखो
देखो-देखो.....
काम कितना भी मुश्किल हो, वो ज़िद पर अड़े
जैसे अक्कल पर उसकी हों पत्थर पड़े
न तो सोचे, न समझे, न सीखे कभी
आगा-पीछा भी उसको न दिखे कभी
चाहे जितना हो टेढ़ा सवाल देखो।
देखो-देखो नजानू का हाल देखो।
देखो-देखो.....

(गीत खत्म होते न होते मंच के एक कोने से टुनिया और मुनिया आती है। गीत गाते लड़कों में से मोटू उनकी ओर देखता है।)

मोटू : अरे, देखो! लड़कियाँ आ रही हैं।

जल्दबाज़ : चलो, उन्हें छकाएँ!

सब : हाँ-हाँ । चलो-चलो।

(सब लड़के उनकी ओर भागते हैं।)

गुलदस्ता : बूढ़ी अम्माँ कहाँ चलीं?

दुनिया : कौन है बूढ़ा? गुलदस्ता भैया, सबसे बड़े तो आप हैं।

गुलदस्ता : अरे! मैंने तुम्हें कब बुढ़िया कहा? क्यों?

जानू : और क्या! हम तो बूढ़ी अम्माँ का खेल खेल रहे हैं।

(जानू कमर झुकाकर, लकड़ी टेककर चलने का अभिनय करने लगता है।)

मुनिया : खेलना है तो खेलो लेकिन हमारा रास्ता तो छोड़ो।

जल्दबाज़ : तुम लोग भी तो खेलने ही जा रही हो न! आज हम लोगों के ही साथ खेलो।

टुनिया : हम लड़कों के साथ नहीं खेलते।

सारे लड़के : क्यों ऽऽऽ!

मुनिया : तुम लोग हमें परेशान करते हो।

छोटू : परेशान नहीं करेंगे तो खेलोगी हमारे साथ?

दुनिया : ठीक है। लेकिन लड़ोगे तो नहीं?

गुलदस्ता : हाँ-हाँ, लड़ेंगे भी नहीं।

सुस्तराम : मैं तो खेलूँगा भी नहीं। मुझे तो नींद आ रही है।

मोटू : ओ सुस्तराम! लड़कों के साथ रहना है कि नहीं?

मुनिया : यह तुम लोग बार-बार लड़का-लड़की करते रहते हो? ऐसी बातें करोगे तो हम लोग चले जाएँगे।

गुलदस्ता : अच्छा-अच्छा। बहस बन्द। चलो, खेलते हैं। बुढ़िया अम्माँ वाला ही खेल।

जानू : बुढ़िया कौन बनेगा? .... सुस्तराम।

सुस्तराम : मैं नहीं बनता बुढ़िया! तुम लोग जान-बूझकर मुझे परेशान करते हो।

मोटू : अच्छा, मैं बनता हूँ बुढ़िया। सब तैयार हो जाओ।

(मोटू दौड़कर एक ओर जाता है और वहाँ से एक लकड़ी टेकते हुए वापस आता है।)

सब : बुढ़िया अम्माँ! कहाँ चली?

मोटू : नदी नहाने।

सब : नदी नहाकर क्या करोगी?

मोटू : रोटी खाऊँगी।

सब : जाओ-जाओ। जल्दी जाओ।

(मोटू मंच के बाएँ हिस्से से अन्दर चला जाता है। सब मोटू की पहली वाली जगह पर जाते हैं और खाना खाने का अभिनय करने लगते हैं। फिर हाथ-मुँह पोंछकर वापस खड़े हो जाते हैं। मोटू वापस आता है।)

सब : बुढ़िया अम्माँ! नहा लिया?

मोटू : नहा लिया।

सब : भूख लगी कि नहीं लगी?

मोटू : अरे, खूब ज़ोर से लगी।

सब : जाओ, तो फिर जल्दी खाओ।

(मोटू अपनी जगह पर पहुँकर बरतन उलटने-पलटने का अभिनय करता है। सब हँसते हैं। मोटू वापस लकड़ी टेकते हुए उनके पास आता है।)

मोटू : मेरी रोटी किसने खाई?

सब : कुत्ते ने।

मोटू : कुत्ता मेरे साथ गया था।

सब : गैया ने।

मोटू : गैया तो नदी किनारे घास चर रही थी।

सब : चिड़िया ने।

मोटू : चिड़िया तो नदी किनारे पेड़ पर बैठी थी।

सब : गधे ने।

मोटू : गधा तो नदी किनारे धोबी के साथ था।

सब : हमने-हमने!

(मोटू उनकी ओर लपकता है। सब यहाँ-वहाँ भागते हैं। सुस्तराम धीरे-धीरे चलता है और पकड़ में आ जाता है।)

सुस्तराम : छोड़ो-छोड़ो। मैंने पहले ही कहा था ....

मोटू : ए-रोना बन्द करो और अपना दाम दो।

(मंच के दाएँ कोने से नजानू आता है।)

सुस्तराम : देखो, नजानू आ रहा है। ओ, नजानू!

(नजानू पास आ जाता है।)

मुनिया : नजानू, हमारे साथ खेलोगे?

सुस्तराम : हाँ-हाँ। खेलेगा। नई घोड़ी, नया दाम!

नजानू : नहीं, सुस्तराम! मैंने खेलकूद में समय बिताना बन्द कर दिया है।

गुलदस्ता : हैं! यानी तुम अभी तक कविताएँ लिख रहे हो?

नजानू : नहीं। आजकल कविताएँ भी नहीं लिखता।

टुनिया : फिर क्या कर रहे हो आजकल?

नजानू : अभी तो कुछ नहीं..... लेकिन कुछ बड़ा काम करना चाहता हूँ।

जल्दबाज़ : यानी तुम नहीं खेलोगे?

नजानू : मेरे पास समय ज़रा कम है। अच्छा, चलूँ

(नजानू दूसरी ओर मंच के भीतर ही भीतर की ओर चला जाता है। सारे बच्चे उसे जाता हुआ देखते हैं। सुस्तराम सबकी नज़र बचाकर भाग जाता है।)

मोटू : ए, सुस्तराम कहाँ गया?

गुलदस्ता : भाग गया.... चलो, उसे पकड़कर लाते हैं।

(सारे बच्चे भाग कर दाईं ओर से मंच के भीतरी हिस्से में चले जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

(मंच के पीछे दाहिने हिस्से में बाजाबाज़ अपने आसपास रखे बाजों को साफ कर रहा है। तुम लोग जब नाटक करो तो तुम्हारे घरों में जो बाजे मिल जाएँ, उनसे ही काम चला सकते हो। बाजाबाज़ कुछ गुनगुना भी रहा है। नजानू बाईं ओर से मंच पर आता है और सीधे बाजाबाज़ के पास पहुँचता हैं।)

नजानू : बाजाबाज़ भाई,नमस्ते!

बाजाबाज़ : नमस्ते, नजानू! आओ-आओ।बैठो।

नजानू : आपके पास कितने सारे बाजे हैं।

बाजाबाज़ : हाँ? हाँ। तुम इन सबके नाम जानते हो?

नजानू : नहीं .... लेकिन एक-दो नाम जानता हूँ। बाजाबाज़ भाई, आप यह सारे बाजे बजा सकते हैं?

बाजाबाज़ : हाँ-हाँ, क्यों नहीं? तुम इनमें से कोई बाजा सुनना चाहोगे?

नजानू : हाँ-हाँ! मुझे तो संगीत में बहुत दिलचस्पी है। बल्कि मैं तो कोई न कोई बाजा बजाना सीखना भी चाहता हूँ।

बाजाबाज़ : तुम सचमुच सीखना चाहते हो?

नजानू : हाँ! मैं चाहता हूँ कि बड़ा होकर आपके जैसा नाम कमाऊँ।

बाजाबाज़ : हाँ-हाँ, ज़रूर। तुम अगर थोड़ी भी मेहनत करो तो मुझसे भी ज़्यादा नाम कमा सकते हो। वैसे, तुम कौन-सा बाजा बजाना सीखना चाहोगे?

नजानू : किस बाजे को बजाना सीखना सबसे आसान है?

बाजाबाज़ : आसान? **(हँसता है)**, जिस बाजे को बजाने में तुम्हारा मन लगे, वही, सबसे आसान हो जाता है।

नजानू : हाँ, लेकिन फिर भी ....

बाजाबाज़ : अच्छा, लो, तुम यह इकतारा बजाओ। यह शायद सबसे आसान है क्योंकि इसमें एक ही तार है....

नजानू : हाँ-हाँ! मुझे भी मालूम है....लाओ, मैं इसे बजाता हूँ।

(बाजाबाज़ नजानू को इकतारा देता है। नजानू उसे बजाने की कोशिश करता है, फिर थोड़ी देर बाद झुँझलाकर नीचे रख देता है।)

बाजाबाज़ : अरे, क्या हुआ?

नजानू : इस इकतारे की आवाज़ तो बहुत धीमी है। मुझे कोई दूसरा, ज़ोर से बजने वाला बाजा दीजिए न!

बाजाबाज़ : अच्छा.... लो, तुम यह वायलिन बजाकर देखो।

(नजानू को वायलिन देता है। नजानू कुछ देर उसे भी बजाकर देखता है और फिर झुँझलाकर वापस दे देता है।)

नजानू : कोई बहुत ज़ोर से बजनेवाला बाजा नहीं है?

बाजाबाज़ : है क्यों नहीं? बिगुल है, बीन है....

नजानू : बस-बस! बिगुल ठीक है। लाइए, उसे ही बजाने की कोशिश करता हूँ।

(बाजाबाज़ उसे बिगुल दे देता है। नजानू उसे बार-बार, खूब ज़ोर-ज़ोर से बजाता है।)

बाजाबाज़ : अरे, नजानू! ज़रा धीरे-धीरे, भाई!

नजानू : अरे वाह! धीरे क्यों? इतना अच्छा तो बाजा है.... देखो, कितनी ज़ोर से बजता है! **(फिर से बजाता है।)**

बाजाबाज़ : हाँ-हाँ! यह काफी ज़ोर से बजता है।.... अगर तुम्हें बिगुल ही पसन्द है तो ठीक है, तुम इसे ही बजाना सीख लो।

नजानू : इसे सीखने की क्या ज़रूरत है? मैं तो बिना सीखे ही इसे बजा सकता हूँ।

बाजाबाज़ : नहीं, नजानू बिना सीखे तो कोई भी काम नहीं हो सकता। लाओ, मुझे दो, मैं तुम्हें बजाना सिखाा हूँ।

नजानू : अब इससे भी ज़्यादा अच्छा कोई क्या बजा सकता है?

बाजाबाज़ : नहीं, नजानू! तुम समझने की कोशिश करो ...।

नजानू : मैं समझता हूँ सब कुछ समझता हूँ। लो, सुनो!

(खूब ज़ोर से बिगुल बजाता है।)

बाजाबाज़ : तुम खाली आवाज़ें निकाल रहे हो। बिगुल बजा नहीं रहे।

नजानू : लो! बजा नहीं रहा हूँ? मैं तो इतना अच्छा बजा रहा हूँ। कितने ज़ोर से!

बाजाबाज़ : ओह, बुद्धू कहीं के! बिगुल बजाने का मतलब यह नहीं है कि उससे ऊँची आवाज़ निकले, बल्कि उसे बजाने का मतलब है कि उससे सुन्दर संगीत पैदा हो!

नजानू : मेरे ख्याल में तो मैं बहुत सुन्दर संगीत पैदा कर रहा हूँ।

बाजाबाज़ : सुर, नजानू, सुर! जैसे तुम बजा रहे हो वह बिलकुल सुरीला नहीं है।... मैं देख रहा हूँ कि तुम्हें संगीत की ज़रा भी समझ नहीं है।

नजानू : संगीत की समझ मुझे नहीं है कि आपको? आप मुझसे जलते हैं, इसलिए ऐसा कह रहे हैं। आप चाहते हैं कि लोग सिर्फ आपका ही संगीत सुनें और आपकी तारीफ करें!

बाजाबाज़ : ऐसा कुछ भी नहीं है। अगर तुम्हारा ख्याल है कि तुम बहुत अच्छा बिगुल बजाते हो तो इसे ले जाओ और इसको जितना जी चाहे बजाओ। लोग अगर तुम्हारी तारीफ करें तो इससे मुझे क्या?

नजानू : मैं तो बिगुल ज़रूर बजाऊँगा!

(वह ज़ोर-ज़ोर से बिगुल बजाता है।)

दृश्य तीन

(वही जगह, जहाँ सारे बच्चे पहले दृश्य में थे। वे अब कोई दूसरा खेल खेल रहे है, जैसे गुलाम-डण्डा, या कुछ और। उन्हें अचानक बिगुल की आवाज़ सुनाई देती है। मोटू घबराकर गिर पड़ता है।)

छोटू : अरे, मोटू! क्या हुआ

मोटू : बाप रे! यह कौन-से जानवर की आवाज़ है?

(फिर से, बिगुल की आवाज़ और तेज़ सुनाई देती है।)

गुलदस्ता : उफ! कितनी भयानक आवाज़ है!

(नजानू मंच के भीतरी भाग से, दाईं ओर से निकलकर बिगुल बजाता हुआ आता है। सारे बच्चे उसकी ओर भागते हैं।)

जल्दबाज़ : यह कैसा शोर है!

नजानू : यह शोर नहीं, संगीत है। देखते नहीं, मैं बिगुल बजा रहा हूँ।

(फिर से बजाता है।)

जल्दबाज़ : बन्द करो, फौरन बन्द करो! तुम्हारा संगीत सुनकर तो हमारे कानों में दर्द होने लगता है।

नजानू : यह इसलिए कि तुम्हें अभी मेरा संगीत सुनने की आदत नहीं पड़ी है। जब आदत हो जाएगी तो कानों में दर्द नहीं होगा।

(फिर से बिगुल बजाता है।)

सुस्तराम : हम तुम्हारा संगीत सुनने की आदत नहीं डालना चाहते! सुना तुमने?

(नजानू फिर भी बिगुल बजाता रहता है।)

मोटू : बिगुल बजाना बन्द करो!

(नजानू का बिगुल छीनने लगता है।)

छोटू : अपने इस रद्दी बिगुल को लेकर भागो यहाँ से।

नजानू : अरे-अरे! ठहरो। मुझे यह तो बताओ कि कहाँ जाऊँ?

गुलदस्ता : किसी मैदान में, या फिर किसी पहाड़ पर और वहीं बजाओ अपना बिगुल!

नजानू : लेकिन वहाँ तो मेरा बिगुल बजाना कोई नहीं सुनेगा।

जानू : क्या यह ज़रूरी है कि कोई तुम्हें बिगुल बजाते हुए सुने?

नजानू : ज़रूर! आखिर मुझे तारीफ करने वाले भी तो चाहिए।

जल्दबाज़ : तो सड़क पर जाकर बजाओ। वहाँ से आने-जाने वालों और पड़ोसियों को तुम्हारा बिगुल खूब सुनाई देगा। हो सकता है कोई तारीफ कर दे!

नजानू : ठीक है!

(नजानू सड़क पर जाकर बिगुल बजाना शुरू कर देता है। सब उसकी ओर देखते हैं। टुनिया अपने घर से बाहर निकलती है।)

टुनिया : यह कौन पागल है... ओ नजानू!

क्या शोर मचा रखा है यह?

नजानू : यह शोर नहीं है, टुनिया!

ज़रा फिर से सुनो!

(फिर से बजाता है।)

टुनिया : मुझे नहीं सुननी
तुम्हारी पों-पों। चलो,
भागो यहाँ से।

नजानू : नहीं भागता! और, मैं बिगुल भी बजाऊँगा।

टुनिया : नहीं भागोगे?

नजानू : नहीं

टुनिया : ठहरो, मैं अपने पापा को बुलाती हूँ।

(टुनिया वापस घर में जाती है। नजानू भागकर आगे जाता है और दूसरे घर के सामने खड़ा होकर बिगुल बजाने लगता है। मुनिया अपने कुत्ते को लेकर निकलती है। किसी बच्चे से कुत्ते का अभिनय करवा सकते हैं।)

टुनिया : कौन है?... अरे, नजानू! तुम यह क्या ऊधम कर रहे हो?

नजानू : तुम इसे ऊधम कहती हो? यह संगीत है, मुनिया, संगीत! लो, सुनो!

मुनिया : अरे-अरे! फिर मत बजाओ, नहीं तो मेरा कुत्ता....

(कुत्ता मुनिया से ज़ंजीर छुड़ाकर नजानू की तरफ लपकता है। नजानू भागता है। मुनिया दौड़कर कुत्ते की ज़ंजीर पकड़ लेती है। नजानू मंच के बीचों-बीच, एकदम सामने आकर खड़ा हो जाता है।)

नजानू : मेरा संगीत किसी की समझ में नहीं आता। असल में अभी लोगों की समझ मेरे संगीत के लायक नहीं हुई है। जब ये लोग लायक हो जाएँगे तो खुद ही मुझसे बिगुल बजाने को कहेंगे। मगर तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। तब क्या मैं ऐसे गँवारों के लिए बिगुल बजाऊँगा?

(नजानू फिर बिगुल मुँह से लगाकर फूँकता है लेकिन आवाज़ नहीं निकलती। सब अपनी पहलेवाली जगह पर, फिर से गाना शुरू करते हैं।)

सब : देखो-देखो नजानू का हाल देखो

कैसे पड़ती है उल्टी चाल देखो

देखो-देखो....

• • •

नजानू बना चित्रकार

दृश्य एक

(दोपहर के बाद का समय। पिछले हिस्से में दाहिनी ओर 'रंगीलाल की चित्रशाला' नाम का एक बोर्ड लगा है। नीचे चित्र और चित्र बनाने का सामान फैला हुआ है। रंगीलाल चित्रपट यानी कैनवास पर एक अधूरा चित्र पूरा करने में लगा है। वहीं कोने में बच्चों का समूह। बच्चे गीत गा रहे हैं।)

गीत : देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी हर चाल देखो
देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कभी अटके इधर कभी भटके उधर
वहीं गड़बड़ पड़े पाँव इसका जिधर
न तो पढ़ने की चिन्ता न पिटने का डर
करे हर दिन नया एक बवाल देखो
देखो-देखो नजानू का हाल देखो

(गीत खत्म होते-होते नजानू गाने वालों के पीछे से प्रकट होता है। और रंगीलाल की ओर जाता है। बच्चे गीत खत्म कर नीचे बैठ जाते हैं और नजानू और रंगीलाल की ओर देखने लगते हैं। रंगीलाल नजानू को आते देखकर खुश होता है।)

रंगीलाल : अरे, नजानू! आओ भाई, आओ। कैसे हो?

नजानू : अच्छा ही हूँ।

रंगीलाल : और तुम्हारा संगीत सीखना कैसा चल रहा है?

नजानू : संगीत? हुँऽ! जब लोगों में संगीत की समझ ही नहीं हो तो सीखने का क्या फायदा?

रंगीलाल : अरे! चलो, अच्छा ही हुआ।

नजानू : अच्छा हुआ! यानी तुम मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो?

रंगीलाल : अरे, नहीं नजानू। मैं तुम्हारा मज़ाक क्यों उड़ाऊँगा? मैं तो तुम्हारा दोस्त हूँ।

नजानू : अच्छा, दोस्त! तुम मुझे चित्र बनाना सिखाओगे?

रंगीलाल : तुम फिर से चित्रकारी करोगे! ***(हँसता है)*** याद है, जब तुमने पिछले साल डॉक्टर गोलीवाला की दीवार पर चित्र बनाया था तो कैसा तमाशा हुआ था?

नजानू : अरे, वह भी कोई चित्रकारी थी? लेकिन इस बार मैं सचमुच खूब मन लगाकर सीखना चाहता हूँ। बोलो, सिखाओगे?

रंगीलाल : तुम्हारा इरादा इतना पक्का है तो ज़रूर सिखाऊँगा। लो, यह ब्रश लो।

नजानू : अरे! एकदम अभी से?

रंगीलाल : हाँ-हाँ, क्यों नहीं? चलो, देखो, ब्रश कैसे पकड़ते हैं.....

(रंगीलाल नजानू को ब्रश चलाना सिखाता है। आगे बैठे बच्चे सामने की ओर मुड़ते हैं। और गाना शुरू करते हैं।)

बच्चे : देखो-देखो नजानू का हाल देखो

कैसी पड़ती है उलटी हर चाल देखो

(गीत खत्म होता है। बच्चे नजानू की ओर देखते हैं। नजानू अपना ब्रश चलाना खत्म करता है और ब्रश धोने लगता है।)

नजानू : मुझे लगता है, चित्र बनाना कोई खास मुश्किल नहीं है। बस, थोड़ा-सा ध्यान लगाए रखने की ज़रूरत है। क्यों, दोस्त?

रंगीलाल : हाँ ध्यान लगाए रखने की ज़रूरत तो है ही। तुम कुछ दिन की मेहनत के बाद अच्छे चित्र बना सकते हो।

(गीत गाने वाले बच्चों में से एक, छोटू धीरे-धीरे रंगीलाल की चित्रशाला की ओर जाता है।)

रंगीलाल : वह देखो छोटू आ रहा है तुम चाहो तो उसका चित्र बना सकते हो।

नजानू : हाँ-हाँ, ज़रूर। ***(छोटू को पुकारता है।)*** छोटू! ज़रा सुनो।

छोटू : क्या बात है, नजानू?

नजानू : सुनो, अपना चित्र बनवाओगे?

छोटू : तुमसे?

नजानू : हाँ, और क्या? मैं रंगीलाल से चित्र बनाना सीख रहा हूँ, न।

छोटू : अच्छा, लेकिन बदले में मुझे क्या देना होगा?

नजानू : अरे, कुछ नहीं। बल्कि मैं तुम्हें तुम्हारा चित्र भेंट कर दूँगा।

छोटू : तुम सच कह रहे हो?

रंगीलाल : हाँ, छोटू। अपना चित्र बनवाकर तुम चित्रकारी सीखने में नजानू की मदद ही करोगे।

छोटू : अच्छा, ठीक है लेकिन ज़्यादा देर मत लगाना।

नजानू : अरे, बिलकुल देर नहीं लगेगी। बस, पाँच मिनट लगेंगे। अच्छा, तुम यहाँ बैठ जाओ।

(नजानू छोटू को एक स्टूल पर बिठाता है। रंगीलाल कैनवास आदि जमाने में नजानू की मदद करता है। नजानू छोटू का चित्र बनाने लगता है। रंगीलाल चित्रशाला के भीतर चला जाता है।)

छोटू : मुझे दिखाओ, तुम मेरा चित्र कैसा बना रहे हो?

नजानू : तुम बोलो नहीं और हिलो-डुलो भी मत। नहीं तो चित्र में तुम्हारी सूरत ठीक नहीं बन पाएगी।

छोटू : तो क्या चित्र में मेरी सूरत बिलकुल ऐसी ही बनेगी?

नजानू : और क्या! हू-ब-हू ऐसी ही।

छोटू : और कितनी देर लगेगी?

नजानू : बस, एक मिनट और।

(छोटू चुप होकर बैठ जाता है। नजानू कोई गीत गुनगुनाते हुए चित्र पर एक-दो बार ब्रश घुमाता है और फिर ब्रश धोकर चित्र कैनवास पर से उतारता है।)

छोटू : चित्र बन गया, नजानू?

नजानू : ***(चित्र को ऐसे पकड़े है कि छोटू उसे न देख पाए।)*** हाँ बन गया।

छोटू : ज़रा मुझे दिखाओ।

(नजानू चित्र छोटू की ओर घुमा देता है। छोटू चिल्लाता है।)

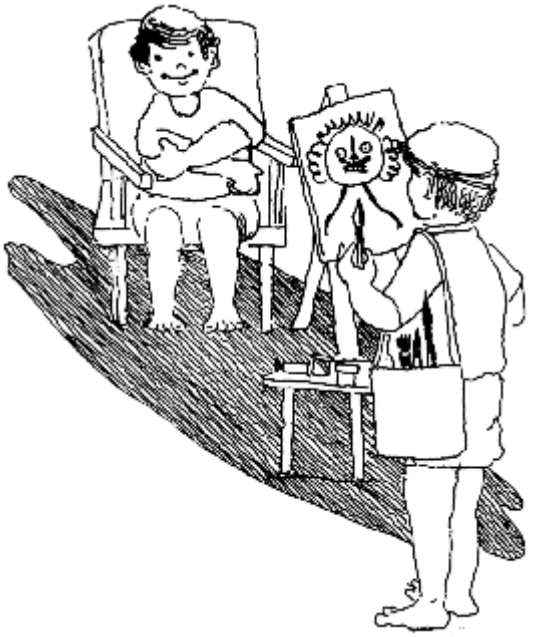

छोटू : क्या मैं ऐसा हूँ?

नजानू : और क्या, ऐसे ही तो हो। और कैसे हो सकते हो?

छोटू : तुमने चित्र में मूँछें क्यों बनाई हैं? मेरी तो मूँछे हैं ही नहीं!

नजानू : अभी नहीं हैं, लेकिन कभी न कभी तो निकलेंगी।

छोटू : अच्छा, लेकिन नाक लाल क्यों है?

नजानू : नाक को लाल मैंने इसलिए बनाया है ताकि वह सुन्दर नज़र आए।

छोटू : और बाल आसमानी रंग के क्यों हैं? मेरे बाल क्या तुम्हें आसमानी दिखाई देते हैं।

नजानू : नहीं, बिलकुल नहीं। लेकिन चित्रकार की अपनी कल्पना भी तो कुछ होती है।

छोटू : न तो तुम चित्रकार हो न तुम्हारी कोई कल्पना है। छिः।

नजानू : तुम नाराज़ क्यों होते हो? अगर तुम्हें आसमानी रंग के बाल पसन्द नहीं हैं तो मैं उन्हें हरा बनाए देता हूँ।

छोटू : नहीं। यह बहुत खराब चित्र है। मुझे दो, मैं इसे अभी फाड़ देता हूँ।

नजानू : अरे तुम इतनी अच्छी रचना को नष्ट करोगे?

(छोटू चित्र छीनना चाहता है। नजानू और छोटू आपस में झगड़ने लगते हैं। शोर होने पर गीत गाने वाले बच्चे उनके पास आते हैं।)

टुन्नी : तुम दोनों लड़ क्यों रहे हो?

नजानू : यह अपना चित्र फाड़ना चाहता है।

छोटू : मेरा चित्र! ज़रा देखो तो तुम लोग! क्या यह मेरा चित्र है?

(टुन्नी हाथ बढ़ाकर नजानू से चित्र ले लेती है। सारे बच्चे देखते हैं।)

टुन्नी : नहीं, यह तुम्हारा चित्र नहीं है।

मोटू : इसमें तो कौओं को डराने के लिए बिजूका बना है।

नजानू : तुम लोग ठीक से समझ नहीं पा रहे हो क्योंकि इस चित्र पर छोटू का नाम नहीं लिखा है। मैं अभी इस पर नाम लिख देता हूँ तब तुम सब लोग समझ जाओगे कि यह किसका चित्र है।

(नजानू पेंसिल उठाकर चित्र पर छोटू का नाम लिखता है और उसे दीवार पर टाँग देता है।)

छोटू : तुमने चित्र दीवार पर क्यों टाँगा?

नजानू : इसलिए कि सब इसे ठीक से देख सकें।

छोटू : अच्छा, ठीक है। जब तुम सो जाओगे तब मैं आऊँगा और इस चित्र को उतारकर फाड़कर फेंक दूँगा।

नजानू : मैं रात भर सोऊँगा ही नहीं और पहरा देता रहूँगा।

टुन्नी : रहने दे, छोटू। यह इस चित्र पर प्रधानमंत्री का नाम लिख देगा, तो क्या यह चित्र प्रधानमंत्री का हो जाएगा?

जल्दबाज़ : हाँ, और क्या?, चलो, शाम हो रही है घर चलते हैं।

सब : हाँ-हाँ, चलो, चलो।

(सारे बच्चे जाते हैं। रंगीलाल भी जाने को तैयार होता है।)

रंगीलाल : तो, नजानू, तुम क्या सचमुच रात में यही रहोगे?

नजानू : हाँ। और, रात में मैं इन सारे नमूनों के चित्र बनाऊँगा। तुम मेरे घर पर जाकर बता दोगे?

रंगीलाल : हाँ बता दूँगा।

(रंगीलाल भी जाता है। नजानू एक नया चित्र बनाने लगता है। अँधेरा।)

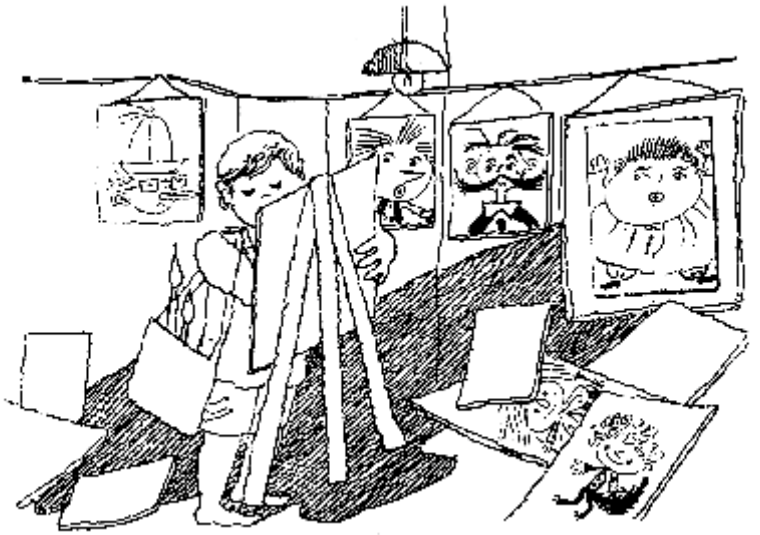

दृश्य दो

(स्थान वही। रात का समय। नजानू बहुत तेज़ी से चित्र बनाने में लगा है। बहुत सारे चित्र यहाँ वहाँ फैले हैं। नजानू अधूरा चित्र पूरा करता है और उसे सूखने के लिए छोड़ देता है। फिर, फैले हुए चित्र एक-एक कर उठाता है और दीवार पर लगाने लगता है। दीवार की जगह मंच के अगले हिस्से में रस्सियाँ या धागे बाँधकर उन पर भी चित्र लगाए जा सकते हैं। फिर अँधेरा।)

दृश्य तीन

(प्रकाश। वही स्थान। सुबह का समय। चित्रों की एक प्रदर्शनी जैसी लगी है। नजानू, चित्रों के नीचे फर्श पर गहरी नींद में सो रहा है। डॉक्टर गोलीवाला आता है, वह एक-एक कर सारे चित्र देखता है और खूब हँसता है। ज़रा हँसी थमने पर वह नजानू को जगाता है।)

गोलीवाला : नजानू! अरे ओ नजानू! उठ। सबेरा हो गया।

(नजानू उठता है।)

नजानू : क्यों जगा दिया? क्या बात है?

गोलीवाला : अरे, उठ तो। तू तो एक ही दिन में सचमुच बहुत बड़ा कलाकार बन गया। वाह, शाबास। क्या चित्र बनाए हैं।

नजानू : तुम्हें सचमुच ये चित्र अच्छे लगे?

गोलीवाला : हाँ भाई, हाँ। मैं अपने जीवन में कभी इतना नहीं हँसा। अच्छा तूने मेरा चित्र नहीं बनाया?

नजानू : बनाया तो है, यह देखो।

(नजानू एक चित्र की ओर इशारा करता है। डॉक्टर गोलीवाला एक क्षण गम्भीर होकर चित्र देखता है, फिर सख्त आवाज़ में नजानू से पूछता है।)

गोलीवाला : यह मेरा चित्र है?

नजानू : और क्या तुम्हारा ही तो है। देखो इस पर तुम्हारा ही नाम भी लिखा है।

गोलीवाला : लेकिन मैं तो ऐसा नहीं हूँ। यह तो बहुत खराब चित्र है। अच्छा होगा अगर तुम इसे यहाँ से उतार दो।

नजानू : क्यों उतार लूँ! यह तो ऐसे ही टँगा रहेगा।

गोलीवाला : मुझे लगता है नजानू कि तुम बीमार हो। शायद तुम्हारी आँखें कुछ खराब हैं। तुमने यह कब देखा कि मेरी नाक की जगह थर्मामीटर है? तुम्हें रात को अण्डी का तेल पीना चाहिए।

नजानू : अण्डी का तेल? ***(बुरा-सा मुँह बनाता है।)*** नहीं, तुम सच कह रहे हो। यह चित्र सचमुच खराब बना है।

(इसी समय सारे बच्चे आते हैं और चित्र देख-देखकर खूब हँसते हैं। गुललेबाज़ अपने चित्र के सामने पहुँचकर चुप हो जाता है। फिर दीवार से अपना चित्र उतारकर हाथ में ले लेता है और चिल्लाकर सबको चुप करता है।)

गुलेलबाज़ : चुप! सब चुप होओ।

(बच्चे चुप होते हैं। गुलेलबाज़ अपना चित्र लेकर नजानू के पास जाता है।)

गुलेलबाज़ : यह मेरा चित्र है?

नजानू : हाँ! और क्या?

गुलेलबाज़ : ध्यान से देखो ज़रा।

नजानू : हाँ तुम्हारा ही है।

गुलेलबाज़ : ***(ज़ोर से चिल्लाकर)*** मैं तुम्हें गुलेल मार दूँगा।

(सारे बच्चे फिर हँसने लगते हैं। इस बार डॉक्टर गोलीवाला सबको चुप करता है।)

गोलीवाला : बस-बस। तुम लोग बेकार ही हँस रहे हो। ज़रा अपने-अपने चित्र देखो, फिर हँसना।

(सारे बच्चे अपने-अपने चित्र ढूँढकर उतारते हैं और गौर से देखते हैं। फिर वे सबके सब नजानू की ओर झपटते हैं।)

सारे बच्चे : यह चित्र है कि रंग में चींटा भिगोकर छोड़ दिया है? तुम सारी ज़िन्दगी चित्र नहीं बना सकते। तुमने हम सबको उल्लु बनाया है। हम तुमसे कभी बात नहीं करेंगे। तुम्हें अपने साथ खिलाएँगे भी नहीं।

(इसी बीच रंगीलाल आता है। वह सारे बच्चों को शान्त करता है।)

रंगीलाल : शान्त हो जाओ भाई, शान्त हो जाओ। बात क्या है?

टुन्नी : नजानू को चित्र बनाना तुमने सिखाया है?

रंगीलाल : हाँ, लेकिन बात क्या हुई?

टुन्नी : देखो, और अच्छी तरह सोचकर बताओ कि क्या यह मेरा चित्र है?

सारे बच्चे : यह देखो मेरा चित्र। और यह मेरा है क्या? मेरा.....

रंगीलाल : बस करो भाई, बस करो। ***(बच्चे शान्त होते हैं।)*** देखो, बात यह है कि नजानू को चित्र बनाना सीखते हुए अभी एक ही दिन तो हुआ है। और वैसे भी ये चित्र खराब तो नहीं बने।

मोटू : हाँ-हाँ, क्यों नहीं। लेकिन पहले अपना चित्र देख लो, फिर यह बात कहना।

रंगीलाल : मेरा चित्र? कहाँ है मेरा चित्र?

(नजानू टँगा हुआ आखिरी चित्र उतारकर देता है।)

नजानू : लो यह रहा।

रंगीलाल : यह मेरा चित्र है? नहीं, नहीं यह नहीं हो सकता।

मुन्नी : क्यों पसन्द आया अपना चित्र?

(सारे बच्चे ज़ोर से हँसते हैं। रंगीलाल ज़ोर से चिल्लाता है।)

रंगीलाल : नजानू....

नजानू : *(डरकर)* क्या है?

रंगीलाल : तुम एकदम अनाड़ी हो। गधे। मुर्ख। तुम कभी कलाकार नहीं बन सकते। तुम भागो यहाँ से और कभी मुझे मुँह मत दिखाना।

(सारे बच्चे हँसते हैं। नजानू डरकर चुपचाप चलने लगता है और मंच के आगे के हिस्से में आकर खड़ा हो जाता है। हँसने वाले बच्चों की आवाज़ धीमी होती जाती है।)

नजानू : ***(दर्शकों से)*** अब मैं कभी चित्र नहीं बनाऊँगा। मैं कभी कलाकार ही नहीं बनूँगा। लोगों के लिए कविता लिखो या संगीत सुनाओ या चाहे उनके चित्र बनाओ सब नाराज़ ही होते हैं, कोई अच्छा नहीं कहता... ***(अचानक चिल्लाकर बच्चों से)*** लेकिन तुम लोग यह मत समझो कि मैं कभी कुछ कर ही नहीं सकता। एक दिन ज़रूर कुछ कर दिखाऊँगा। ***(बच्चे ज़ोर से हँसते हैं। नजानू और ज़ोर से चिल्लाता है।)*** और अगली बार मैं तुम लोगों से तभी मिलूँगा, जब सचमुच कुछ सीख लूँगा।

(बच्चे खूब ज़ोर-ज़ोर से हँसते हैं। नजानू गुस्से से बाहर जाता है। बच्चे आगे आकर गीत गाते हैं।)

देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उलटी हर चाल देखो
देखो देखो नजानू का हाल देखो।

(गीत खत्म होता है।)

•••

नजानू ने रंग जमाया

दृश्य एक

(इस नाटक में मंच के बारे में हम कोई जानकारी नहीं दे रहे हैं। केवल पात्रों के आने-जाने के बारे में बताएँगे। बाकी सब तुम्हारी कल्पना के अनुसार। छोटू, मोटू टुन्नी, मुन्नी, जानू, गुलेलबाज़ और गोलीवाला गीत गा रहे हैं।)

गीत : देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उलटी हर चाल देखो
देखो देखो नजानू का हाल देखो।

जल्दबाज़ : सुनो, सुनो। एक मज़ेदार बात सुनो।

छोटू : क्या आफत है। जल्दबाज़ तुम हमें गाने भी नहीं देते।

जल्दबाज़ : अब इस गाने की ज़रूरत नहीं है।

टुन्नी, मुन्नी : क्या मतलब?

गोलीवाला : साफ-साफ बताओ क्या बात है?

जल्दबाज़ : बात यह है कि मैं अभी-अभी नजानू से मिलकर आ रहा हूँ।

मोटू : तो क्या हुआ? वह कोई प्रधानमंत्री तो है नहीं।

गुलेलबाज़ : तुम लोग उसे बोलने देते हो या मैं अपनी गुलेल निकालूँ।

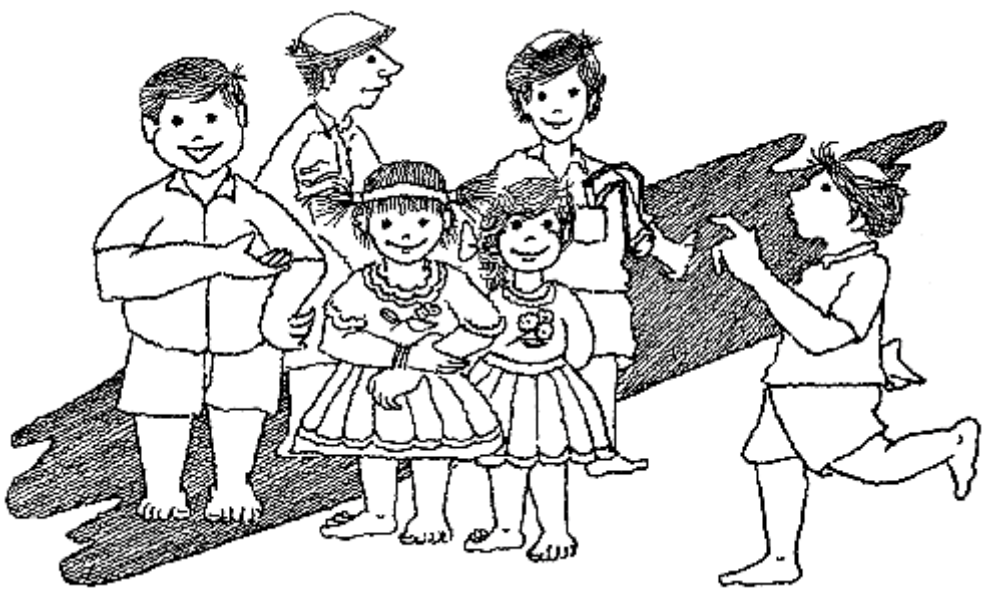

टुन्नी : अच्छा चुप। सब चुपचाप रहो। हाँ जल्दबाज़ अब बोलो क्या हुआ?

जल्दबाज़ : यह तो तुम सबको मालूम है कि नजानू पिछले महीने भर से हमारे साथ खेलने नहीं आ रहा है।

मुन्नी : लेकिन हम तो उसके घर जाते ही रहते हैं।

जल्दबाज़ : हाँ, लेकिन हमने कभी यह भी सोचा है कि वह दिन भर में क्या करता रहता है।

जानू : ओफ्फो! ज़्यादा बोर मत करो।

गोलीवाला : और क्या! बताना है तो बताओ, नहीं तो हमें गाने दो।

जल्दबाज़ : तुम लोग सुनते तो हो नहीं। आज जब मैं उसके घर गया तो उसने मुझे जादू के बहुत से खेल दिखाए।

टुन्नी : जादू के खेल? कैसा जादू?

जल्दबाज़ : ऐसा वैसा जादू नहीं, अंकों का जादू।

जानू : नजानू और अंकों का जादू। हो ही नहीं सकता।

जल्दबाज़ : क्यों? तुम्हारा नाम जानू है तो इसका यह मतलब तो नहीं कि तुम्हीं सब कुछ जानते हो।

मुन्नी : अच्छा-अच्छा बहस मत करो! चलो सब उसके घर चलते हैं। खुद ही देख लेंगे।

गुलेलबाज़ : हाँ, चलो।

(सब जाते हैं)

दृश्य दो

(सब नजानू के घर पहुँचते हैं। छोटू नजानू को आवाज़ देता है।)

छोटू : नजानू। नजानू। ओ नजानू।

(नजानू बाहर आता है)

नजानू : अरे! तुम सबके सब एक साथ? आओ-आओ, अन्दर चलो।

मोटू : नहीं नजानू। हम लोग यहीं ठीक हैं।

नजानू : बात क्या है?

जानू : हम लोग तुम्हारा अंकों का जादू देखने आए हैं।

नजानू : अच्छा-अच्छा। तो जल्दबाज़ ने तुम्हें बता दिया।

टुन्नी : नजानू तुम क्या सचमुच जादू कर सकते हो?

नजानू : अरे नहीं यह सब तो गणित की बहुत आसान क्रियाएँ हैं, जिन्हें एक बार समझकर कोई भी कर सकता है।

जानू : कुछ कर के दिखाओगे भी या बातें ही करते रहोगे।

नजानू : दिखाना क्या, हम सब मिलकर करेंगे। रुको, मैं अपना ब्लैकबोर्ड लाता हूँ।

(नजानू भीतर जाता है)

मुन्नी : नजानू तो कह रहा है कि कोई जादू नहीं है।

गोलीवाला : धीमे बोलो। जब तक हम किसी काम को सीखें नहीं तब तक वह जादू ही तो है।

गुलेलबाज़ : यह तो आज समझदारी की बातें कर रहा है।

जल्दबाज़ : चुप रहो, नजानू आ रहा है।

(नजानू कन्धे पर एक थैला लटकाए और हाथों में ब्लैकबोर्ड उठाए बाहर आता है। कुछ साथी उसे ब्लैकबोर्ड ऐसी जगह रखने में मदद करते हैं जहाँ से ब्लैक बोर्ड दर्शकों को भी दिखाई पड़े। फिर नजानू थैले में से चॉक, कोरे कागज़, पेंसिल निकालता है और सबको एक-एक कागज़ और पेंसिल देता है।)

नजानू : लो सब एक-एक कागज़, पेंसिल ले लो। मैं ब्लैकबोर्ड पर लिखूँगा तुम लोग चाहो तो उसे कागज़ पर उतार सकते हो, उसकी जाँच भी कर सकते हो। तो अब शुरू करें?

जल्दबाज़ : हाँ, हाँ, फौरन।

नजानू : सबसे पहले हम अंक एक का जादू देखते हैं।

(नजानू ब्लैकबोर्ड पर बड़े-बड़े अक्षरों में 11x 11, 111 x 111, 1111 x 1111, 11111 x 11111 ..... लिखता है।)

नजानू : तुम इसमें से एक-एक सवाल ले लो और अपने कागज़ पर हल करो।

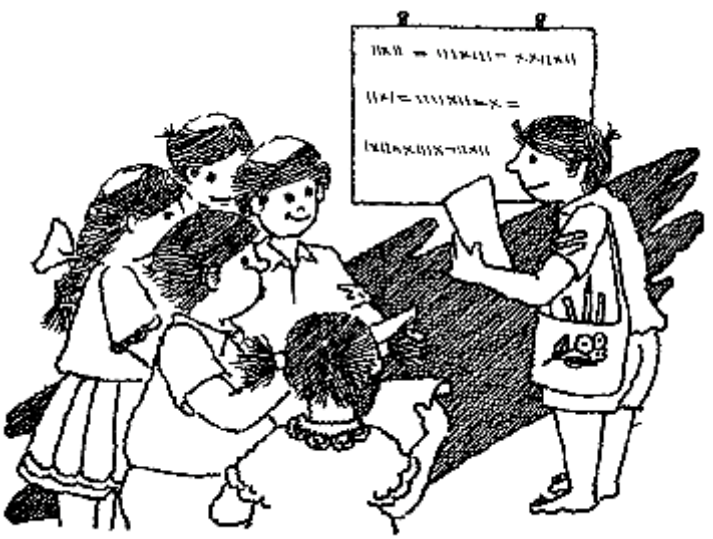

टुन्नी : बाप रे! इतने बड़े-बड़े सवाल!

जानू : तो तुम छोटा सवाल ले लो। सबसे बड़ा सवाल मैं ले लेता हूँ।

(सब अपने लिए एक-एक सवाल छाँट लेते हैं।)

नजानू : अब देखो, मैं इन सवालों के हल लिखता हूँ। तुम सब अपने-अपने उत्तर मिलाते जाना।

छोटू : तुमने तो उत्तर रट लिए होंगे।

नजानू : बिलकुल नहीं, क्योंकि इसकी ज़रूरत ही नहीं है।

मोटू : चुप रहो। मुझे सवाल हल करने दो।

(नजानू बोर्ड पर हल लिखता है: *121, 12321, 1234321. 123454321. 12345654321.1234567654321,123456787654321, 12345678987654321)*

टुन्नी : मैंने तो सवाल हल कर लिया।

जल्दबाज़ : चुप। जितनी बड़ी तू उतना तेरा सवाल।

छोटू : मेरा हल भी एकदम सही है। 111 गुणित 111 बराबर 12321।

मोटू : मेरे सवाल का उत्तर एकदम सही है, 1234321

नजानू : अच्छा ठीक है। अब बाकी लोग चाहें तो रुक सकते हैं, बचे हुए सवाल मैं वैसे ही समझाता हूँ। ध्यान से देखो। पहले सवाल में 11 का वर्ग हैं। इसमें गुणित और गुणक दोनों में एक का अंक दो बार आता है। मैंने पहले दो तक सीधी गिनती लिखी फिर एक तक उल्टी। दूसरे सवाल में 111 यानी एक का अंक तीन बार है इसलिए पहले तीन तक सीधी गिनती लिखी और उसके बाद एक तक उल्टी। इसी तरह से आखिरी सवाल में एक का अंक नौ बार है इसलिए पहले नौ तक सीधी गिनती और बाद में एक तक उल्टी लिख दी। अब बताओ क्या इसे रटने की ज़रूरत है?

गुललेबाज़ : नहीं यह तो एकदम आसान है।

गोलीवाला : आसान तो लगेगा ही क्योंकि नजानू ने समझने का तरीका बता दिया।

नजानू : इसे दूसरे तरीकों से भी समझा जा सकता है, लेकिन वे तरीके तुम खुद ढूँढना। अब एक दूसरा खेल खेलते हैं।

टुन्नी : लेकिन खेल मज़ेदार होना चाहिए

नजानू : मंज़ूर, मज़ा नहीं आएगा तो खेल बन्द कर देंगे।

जानू : अब जल्दी शुरू करो।

नजानू : जानू तुम कागज़ पर तीन अंकों की कोई भी संख्या लिख लो, लेकिन मुझे मत बताना।

(जानू लिखता है।)

जानू : लिख ली।

नजानू : अब वही संख्या दोबारा इकाई के अंक के आगे लिख लो।

जानू : लिख ली। यह संख्या तो छह अंकों की हो गई।

नजानू : हाँ, अब यह कागज़ गुललेबाज़ को दे दो *(जानू कागज़ गुलेलबाज़ को दे देता है।)*

गुलेलबाज़ : मैं इस कागज़ पर क्या करूँ?

नजानू : कागज़ का कुछ मत करो, लेकिन जो संख्या उस पर लिखी है उसमें सात का भाग दे दो।

गोलीवाला : तुम क्या कर रहे हो नजानू?

नजानू : मैं वो संख्या बिना देखे बताने वाला हूँ जो जानू ने सोची है।

मुन्नी : अरे वाह, क्या तुम सचमुच ऐसा कर सकते हो?

नजानू : बिलकुल। तुम देखती जाओ।

गुलेलबाज़ : लो, हो गया भाग। अब?

नजानू : अब यह कागज़ मुन्नी को दे दो और मुन्नी, गुलेलबाज़ का जो भागफल आया है, तुम उसमें ग्यारह का भाग दे दो।

छोटू : अच्छा, नजानू अगर तुम जानू की सोची हुई संख्या नहीं बता पाए तो?

नजानू : पहले तो ऐसा होगा नहीं, और अगर हो जाए तो मैं तुम सबको अपने बगीचे के आम खिलाऊँगा।

जानू : और अगर तुमने सोची हुई संख्या बता दी तो हम तुम्हें अपने साथ फिर से खिलाने लगेंगे।

नजानू : अगर नहीं बता पाऊँ तो नहीं खिलाओगे?

जानू : अरे, वह तो बात की बात है। अब तो हम भी तुम्हारे बिना नहीं खेलेंगे।

मुन्नी : नजानू, भाग तो हो गया। अब?

नजानू : अब यह कागज़ मोटू को दे दो।

(मुन्नी कागज़ मोटू को देती है।)

मोटू : नहीं, नहीं मुझे मत दो मैं तो भाग में बहुत कमज़ोर हूँ।

नजानू : घबराओं मत, जो संख्या शेष बची है वह तो चार अंकों की ही रह गई है।

मोटू : अरे तुम्हें कैसे मालूम?

नजानू : वह बाद में बताऊँगा, पहले तुम उसमें तेरह का भाग दो।

छोटू : नजानू, तुम अगर जानू की संख्या बता दोगे तो क्या हमें आम नहीं खिलाओगे?

नजानू : देखो आम तो पक ही चुके हैं और इतने सारे आम खाएगा कौन?

मोटू : नजानू मैंने भागफल निकाल लिया। अब?

नजानू : अब तुम कागज़ जानू को दे दो।

(मोटू कागज़ जानू को देता है।)

नजानू : जानू, आखिरी यानी की मोटू ने जो भागफल निकाला है वो देखो।

जानू : अरे! यही संख्या तो लिखी थी मैंने।

नजानू : मैंने कहा था कि मैं तुम्हारी संख्या बता दूँगा।

(सब शोर मचाते हैं।)

टुन्नी : लाओ में देखूँ।

छोटू : अरे, मुझे भी तो देखने दो

गुलेलबाज़ : अरे वाह। यह तो कमाल है।

मुन्नी : चुप। सब चुप होओ।..... अच्छा नजानू तुमने यह कैसे किया?

नजानू : मैंने नहीं बल्कि तुम्हीं लोगों ने सब कुछ कर दिया।

गोलीबाज़ : अच्छा, लेकिन हमें ज़रा समझाओ तो।

नजानू : ठीक है, देखो, जानू ने जो संख्या सोची थी वह 487 ***(बोर्ड पर लिखता है।)*** फिर इसके आगे दोबारा लिखा 487 यानी अब संख्या हो गई 487487। इसका मतलब हुआ कि जानू ने 487 में 1001 का गुणा कर दिया। अब, सबसे पहले गुलेलबाज़ ने इसमें सात से भाग दिया। फिर, मुन्नी ने गुलेलबाज़ के भागफल में ग्यारह से और मुन्नी के भागफल में मोटू ने तेरह से भाग दिया। यानी कि तीनों ने कुल मिलाकर 7X11X13 यानी 1001 से भाग किया। तो अब तुम्हीं सोचो कि उत्तर क्या आना चाहिए?

जानू : मतलब यह कि मैंने अपनी संख्या में 1001 से गुणा किया और इन सबने उसमें 1001 से भाग कर दिया।

मुन्नी : और क्या? इसका मतलब यह कि नजानू ने हमें बुद्धू बनाया।

नजानू : अरे नहीं..... नहीं (हँसता है)। अच्छा चलो तुम्हें एक गिलास को कागज़ के ऊपर खड़ा करके दिखाता हूँ।

मोटू : वाह! यह कौन-सी बड़ी बात है। लाओ मुझे दो गिलास और कागज़, मैं करता हूँ।

नजानू : हाँ, लो। ***(नजानू झोले में से गिलास और कागज़ निकालकर देता है। मोटू कागज़ को ज़मीन पर रखकर उसके ऊपर गिलास रख देता है।)***

मोटू : देखो। यह तो मैंने ही कर दिया।

नजानू : ऐसे नहीं। ***(नजानू दो गिलासों के ऊपर कागज़ के दोनों सिरों को रखता है।)*** अब इस कागज़ के ऊपर गिलास रखो।

जानू : इस तरह कैसे रखा जा सकता है?

गुलेलबाज़ : नहीं। इस पर गिलास नहीं रखा जा सकता।

नजानू : तुम लोग करके देख लो, फिर मैं करके दिखाऊँगा।

जल्दबाज़ : नजानू तुम्हीं करो ना, हमसे यह नहीं होगा।

नजानू : अच्छा। देखो, कागज़ को मैं इस तरह मोड़ता हूँ।

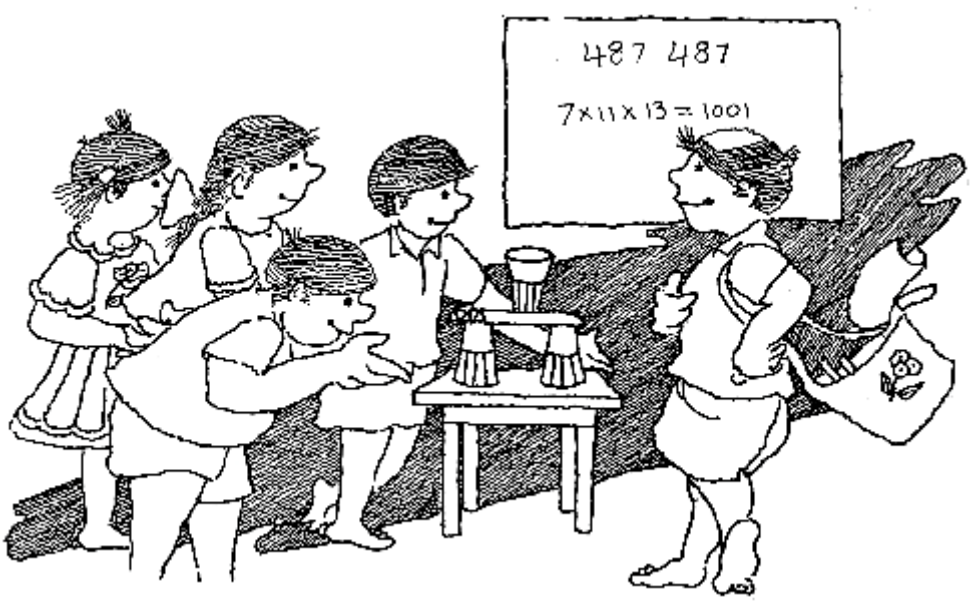

(वह कागज़ को इस तरह मोड़ता है जैसे हम पंखा या साँप बनाने के लिए मोड़ते हैं।) और अब यह कागज़ दो गिलासों के किनारों पर रख दिया। इसके ऊपर गिलास आसानी से खड़ा हो जाएगा।

(नजानू कागज़ को मोड़कर दो गिलासों के किनारों पर रखकर तीसरा गिलास कागज़ पर रखता है।)

गोलीवाला : अरे वाह! यह तो हमने सोचा ही नहीं था।

नजानू : तुमने सोचा हो या नहीं पर मैंने बुद्धू नहीं बनाया किसी को। अच्छा अब चलो, चलकर आम खाते हैं। बाकी सवाल फिर।

छोटू : वाह! यह हुई न कोई बात।

सब : चलो-चलो मज़ा आ गया
देखो देखो नजानू का हाल देखो
हुई सीधी वो उल्टी-सी चाल देखो
क्या ज़रूरी है करना सभी कुछ अभी
हाथ पर हाथ रख बैठना ना कभी
बाँध लो गाँठ में बात इतनी सभी
तुम जो जूझे कि सुलझा सवाल देखो
देखो देखो .....

(गीत गाते-गाते सब जाते हैं)

• • •

चलते चलते .....

बच्चों के साथ नाटक करते वक्त हमेशा यह प्रश्न खड़ा हो जाता है कि नाटक कैसा हो, उनकी विषय-वस्तु क्या हो, आदि आदि। हम तलाश करते हैं ऐसा नाटक जिसमें विषय बच्चों के अनुरूप हो, मज़ेदार हो और संवाद उनके मुँह से अच्छे लगें, स्वाभाविक लगें।

ऐसी ही तलाश के दौरान 'नजानू कवि कैसे बना' कहानी का नाट्य रूपान्तर करके, खेलने के बारे में सोचा गया। जब बच्चों ने कहानी पढ़ी तो उन्हें मज़ा आ गया। फिर हमने तय किया कि अब इसी कहानी को नाटक में बदलकर खेलेंगे।

निकोलाई नोसोव की 'नजानू की कहानियों' में नाट्य रूपान्तर की गुंजाइश तो है ही, साथ ही विषय-वस्तु बच्चों के लिहाज़ से बहुत मज़ेदार है। बच्चों के भिन्न-भिन्न स्वभावों वाले पात्र और उनके आपसी रिश्तों की बुनावट, दोनों ही बातें इन कहानियों की खूबी हैं। 'कवि कैसे बना' नाटक खेलते वक्त बच्चों ने नाटक के संवादों में अपने संवाद भी जोड़े। इस गुंजाइश से उनकी रचनात्मकता को भी जगह मिली, जिससे बच्चों ने नाटक करने में अधिक आनन्द का अनुभव किया।

नजानू की दो अन्य कहानियों का नाट्य रूपान्तर भी इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर किया गया। और फिर चौथा नाटक उन्हीं पात्रों को लेकर लिखा गया।

पढ़ने वाले बच्चों से यह उम्मीद तो की जा सकती है कि वे स्वयं ऐसी कहानियाँ चुनकर उनका नाट्य रूपान्तर करेंगे और खेलेंगे।

• कविता सुरेश

बच्चों के लिए

नाटकों का एक और संग्रह

हड़डी
और अन्य नाटक

मूल्य: ₹ 48.00

9 788187 171133

एकलव्य

मूल्य: ₹ 40.00